डॉ. बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (assistant prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री
स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा), द्वितीय वर्ष

दिनांक- 27.4.2020
(व्याख्यान संख्या-13)

* अंधा युग से सप्रसंग व्याख्या

अवतरण -- "युद्धोपरांत..... अंधों के माध्यम से।"

प्रस्तुत व्याख्येय अवतरण धर्मवीर भारती रचित 'अंधा युग' नामक काव्य नाटक से अवतरित है। अंधा युग के आरंभ में ही 'उद्घोषणा' से उद्धृत प्रस्तुत पंक्तियों में नेपथ्य से की गयी उद्घोषणा के रूप में युग के अंधत्व का संकेत दिया गया है।

महाभारत के भयंकर युद्ध के पश्चात् पृथ्वी पर अंधे युग का आगमन हुआ। जिस प्रकार अंधे व्यक्ति को वास्तविकता का भान नहीं होता, उसके समक्ष सभी वस्तुएँ विकृत होती हैं, उसी प्रकार इस अंधे युग में स्थितियाँ लोगों की चित्तवृत्तियाँ एवं आत्माएँ विकृत हो चुकी हैं। लोग मर्यादा रहित हो चुके हैं। इसमें मर्यादा का एक बहुत ही भयंकर-सा सूत्र विद्यमान है, पर वह भी परस्पर विरोधी दो पक्षों में जैसे उलझा हुआ है। दोनों पक्षों (कौरव-पांडव) की मर्यादा समस्या को सुलझाने का साहस केवल कृष्ण में ही है, क्योंकि कृष्ण ही ऐसे व्यक्ति हैं जो भविष्य की रक्षा करने में सक्षम है और आसक्ति रहित हैं। कृष्ण के अतिरिक्त शेष व्यक्ति अधिकांशतः पथभ्रष्ट, आत्मबलहीन एवं मनोविकृति के शिकार हैं। ये सभी प्राणी अपने कुंठित अंतःहृदय की अंधी गुफाओं के वासी हैं, अर्थात कुंठाग्रस्त हैं, किंकर्तव्यविमूढ़ हैं। उनके सामने कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। प्रस्तुत नाटक में इन्हीं अंधों की कथा निबद्ध है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि अंधों के सहारे ज्योति की कथा इस नाटक में निबद्ध है। भाव यह है कि यथार्थ के खुरदुरे पथ के दिग्दर्शन के माध्यम से पुरातन आदर्श की महत्ता की स्थापना की हृदयग्राही कोशिश की गयी है। इन व्याख्येय पंक्तियों में नाटक के नामकरण में निहित व्यंजना का भी संकेत मिलता है।